Har Sahaabiye Nabi Jannati Jannati (Hindi)

हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती

- सब सहाबा से जन्नत का वा'दा 2
- फ़ज़ीलत के ए'तिबार से सहाबए किराम की तरतीब 3
- सहाबी से कोई भी वली बढ़ नहीं सकता 7
- फ़ज़ाइले सहाबा के बारे में 40 ह़दीसें 10

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती

येह रिसाला **(हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • Email : **hind.printing92@gmail.com**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती

दुआए अ़त्तार **या अल्लाह** पाक ! जो कोई रिसाला : **''हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती''** पढ़ या सुन ले उसे और उस की क़ियामत तक आने वाली सारी नस्लों को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सच्ची ग़ुलामी नसीब फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत कर । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले की..... (ह़िकायत)

अबू अ़ली क़त्ता़न कहते हैं : मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं (इ़राक़ के शह़र) ''कर्ख़'' की जामेअ़ मस्जिद शर्क़िय्या में हूं, वहां मैं ने मह़बूबे परवर्दगार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार किया, आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ दो आदमी और भी थे जिन्हें मैं नहीं जानता था, मैं ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ किया मगर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब न दिया, मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप पर दिन रात में इतनी इतनी मरतबा दुरूदो सलाम भेजता हूं और आप ने मुझे अपने जवाबे सलाम से मह़रूम फ़रमा दिया ? (**अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले) प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम मुझ पर दुरूद भी भेजते हो और मेरे सह़ाबा को बुरा भला भी कहते हो ।'' मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप के मुबारक हाथ पर तौबा करता हूं आयिन्दा ऐसा

नहीं करूंगा। फिर सरकारे नामदार, दो जहां के सरदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (सलाम के जवाब में इर्शाद) फ़रमाया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ।

(سعادۃ الدارین ص۱۶۳)

क्यूं न हो रुत्बा बड़ा, अस्ह़ाबो अहले बैत का है ख़ुदाए मुस्त़फ़ा, अस्ह़ाबो अहले बैत का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह करीम ने सब सह़ाबा से जन्नत का वा'दा फ़रमा लिया है

अल्लाह पाक पारह 27 **सूरतुल ह़दीद** आयत 10 में फ़रमाता है :

لَا يَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ؕ اُولٰٓىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ۝۱۰

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्ह़े मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं जिन्हों ने बा'द फ़त्ह़ के ख़र्च और जिहाद किया, और इन सब से **अल्लाह जन्नत** का वा'दा फ़रमा चुका और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

सह़ाबए किराम की दो अक़्साम

इस आयते मुक़द्दसा में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की दो अक़्साम बयान की गई और उन सब के लिये "حُسْنٰى" या'नी **जन्नत** का वा'दा किया गया। وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और इन सब से **अल्लाह जन्नत** का वा'दा फ़रमा चुका) के तह़्त शैख़ अह़मद सावी मालिकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मा'ना येह है कि वोह तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जो फ़त्ह़े मक्का से पहले ईमान लाए और राहे ख़ुदा में ख़र्च किया

और जिन्हों ने फ़त्हे मक्का के बा'द ईमान ला कर राहे ख़ुदा में ख़र्च किया, **अल्लाह** पाक ने उन तमाम से **حُسْنٰی** या'नी जन्नत का वा'दा फ़रमा लिया है । **(تفسیر صاوی ج٦ ص٢١٠٤)**

हर सहाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

सब सहाबियात भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सहाबी की ता'रीफ़

हज़रते अ़ल्लामा हाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **اَلصَّحَابِيّ: مَنْ لَّقِيَ النَّبِيَّ صلى اللّٰهُ عَلَيْه وَسَلَّم مُؤْمِنًا بِهٖ، ثُمَّ مَاتَ عَلَى الْاِسْلَام** या'नी जिन खुश नसीबों ने ईमान की ह़ालत में **अल्लाह** करीम के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात की हो और ईमान ही पर उन का इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा, उन खुश नसीबों को "**सहाबी**" कहते हैं । **(نخبة الفکر ص١١١)**

सहाबए किराम की ता'दाद

अकाबिर मुहद्दिसीन के मुताबिक़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता'दाद एक लाख से सवा लाख के दरमियान थी । आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के नाम मा'लूम नहीं, जिन के मा'लूम हैं (उन की ता'दाद तक़रीबन) सात हज़ार है । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 400)

फ़ज़ीलत के ए'तिबार से सहाबए किराम की तरतीब

हज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बा'दे अम्बियाओ मुरसलीन, तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्नो मलक (या'नी इन्सान, जिन्न और फ़िरिश्तों) से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं,

फिर उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली फिर बक़िय्या अ़श्रए मुबश्शरा व ह़ज़राते ह़सनैन व अस्ह़ाबे बद्र व अस्ह़ाबे बैअ़तुर्रिज़्वान رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के लिये अफ़्ज़लिय्यत है और येह सब क़त़्ई (या'नी यक़ीनी) जन्नती हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. अव्वल, स. 241, 249 ब तग़य्युरे क़लील)

इबारत में फ़िरिश्तों से मुराद आ़म फ़िरिश्ते हैं क्यूं कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल नहीं हैं बल्कि फ़िरिश्तों में सब से आ'ला दरजे वाले फ़िरिश्ते जिन्हें "मलाइकए मुक़र्रबीन" कहा जाता है, जिन में अ़र्श उठाने वाले और "रसूल फ़िरिश्ते" जैसे : जिब्रईल व मीकाईल व इसराफ़ील व इ़ज़राईल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام दाख़िल हैं, येह फ़िरिश्ते तमाम सह़ाबए किराम से अफ़्ज़ल हैं।

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश, स. 330)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

चार याराने नबी

सूरतुल बक़रह की आयत 13 में इर्शाद होता है :

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन से कहा जाए ईमान लाओ जैसे और लोग ईमान लाए हैं, तो कहें क्या हम अह़मक़ों की त़रह़ ईमान ले आएं सुनता है वोही अह़मक़ हैं मगर जानते नहीं।

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا जिन्हें दुआए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से इ़ल्मे तफ़्सीर ह़ासिल

हुवा, **सूरतुल बक़रह** की आयत 13 के इस ह़िस्से ''كَمَآ اٰمَنَ النَّاسُ'' (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** जैसे और लोग ईमान लाए हैं) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''जैसे ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ईमान लाए । (ابن عساکر ج۳۹ص۱۷۷) इन चार यारों को ख़ास करने की वज्ह येह है कि इन के ईमान का ख़ुलूस उस वक़्त अ़वामो ख़वास में मश्हूर हो चुका था ।'' (تفسیر عزیزی پارہ اوّل ص۱۳۷)

इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

जिनां बनेगी मुह़ब्बाने चार यार की क़ब्र जो अपने सीने में येह चार बाग़ ले के चले

अल्फ़ाज़ मआ़नी : जिनान : जन्नतें, **मुह़ब्बान :** मह़ब्बत करने वाले ।

शर्ह़े कलामे रज़ा : जो अपने सीनों में बाग़े रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन चारों महक्ते फूलों (या'नी चार यारों) की मह़ब्बत क़ब्रों में साथ ले जाएंगे, **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की रह़मत से उन की क़ब्रें जन्नत के बाग़ बन जाएंगी ।

अल्लाह ! मेरा ह़श्र हो बू बक्र और उ़मर

उ़स्मां ग़नी व ह़ज़रते मौला अ़ली के साथ

(वसाइले बख़्शिश, स. 209)

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायत

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे प्यारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुल्के शाम

आए तो एक राहिब (या'नी ईसाई इ़बादत गुज़ार) से सामना हुवा, राहिब ने उन्हें देख कर कहा : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के ह़वारी (या'नी साथी) जिन्हें सूली दी गई और आरों से चीरा गया वोह भी मुजाहदे (या'नी इबादतो रियाज़त) में इस मक़ाम तक नहीं पहुंचे, जिस मक़ाम तक ह़ज़रते मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पहुंचे हुए हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की : (राहिब ने जिन की ता'रीफ़ की थी) आप उन सह़ाबए किराम के नाम बता सकते हैं ? तो उन्हों ने ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल, ह़ज़रते बिलाल और ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का नाम लिया। (**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 6, स. 461)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आलो अस्ह़ाबे नबी सब बादशह हैं बादशाह मैं फ़क़त अदना गदा अस्ह़ाबो अहले बैत का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबिये रसूल का मर्तबा

''**सह़ाबिये रसूल**'' होना **अल्लाह** पाक की बहुत बड़ी ने'मत है, बड़े से बड़ा वली, सह़ाबी के मर्तबे को नहीं पा सकता, हर सह़ाबी आ़दिल और जन्नती है। कोई शख़्स भले कितनी ही इबादत कर ले वोह कभी भी सह़ाबी नहीं बन सकता क्यूं कि ''**सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सोह़बत पाई, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से इ़ल्मो अ़मल ह़ासिल किये, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तरबियत पाई वोह तो इन्सान क्या

फ़िरिश्तों से भी बढ़ गए ।'' (मिरआत, जि. 8, स. 340) फ़िरिश्तों से अफ़्ज़ल में वोही तफ़्सील है जो सफ़ह़ा 4 पर गुज़र चुकी ।

सह़ाबा वोह सह़ाबा जिन की हर दिन ईद होती थी ख़ुदा का क़ुर्ब ह़ासिल था नबी की दीद होती थी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबी से कोई भी वली बढ़ नहीं सकता

''**बहारे शरीअ़त**'' में है : तमाम सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللهُ عَنْهُم) अहले ख़ैरो सलाह़ (या'नी भलाई वाले) और आ़दिल हैं । इन का जब ज़िक्र किया जाए तो ख़ैर (या'नी भलाई) ही के साथ होना ''**फ़र्ज़**'' है । किसी सह़ाबी के साथ सूए अ़क़ीदत (या'नी बुरा अ़क़ीदा रखना) बद मज़्हबी व गुमराही व इस्तिह़क़ाक़े जहन्नम (या'नी जहन्नम का ह़क़दार होना) है कि वोह (बद ए'तिक़ादी) हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बुग़्ज़ (या'नी दुश्मनी) है, कोई ''वली'' कितने ही बड़े मर्तबे का हो, किसी **सह़ाबी** के रुत्बे को नहीं पहुंचता । (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 252 ता 253 से मुख़्तसरन)

काना मुर्दा

मक्तबतुल मदीना के 48 सफ़ह़ात के रिसाले : ''**क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात**'' सफ़ह़ा 26 पर है : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा एक पड़ोसी गुमराही की बातें किया करता था, उस के मरने के बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि **काना** है । मैं ने पूछा : येह क्या मुआ़मला है ? जवाब दिया : मैं ने सह़ाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की मुबारक शान में ''ऐ़ब'' निकाले, **अल्लाह** पाक ने मुझ को ''ऐ़बदार'' कर दिया ! येह कह कर उस ने अपनी **फूटी हुई आंख** पर हाथ रख लिया । (شرحُ الصُّدور ص۲۸۰)

फ़िरिश्ते सह़ाबा का इस्तिक़्बाल करेंगे

तमाम सह़ाबए किराम (رضی اللہ عنہم) आ'ला व अदना (और उन में अदना कोई नहीं) सब जन्नती हैं, वोह जहन्नम की भिनक (या'नी हलकी सी आवाज़ भी) न सुनेंगे और हमेशा अपनी मन मानती मुरादों में रहेंगे, मह़शर की वोह बड़ी घबराहट उन्हें ग़मगीन न करेगी, फ़िरिश्ते उन का इस्तिक़्बाल करेंगे कि येह है वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था। येह सब मज़्मून कुरआने अ़ज़ीम का इर्शाद है। (बहारे शरीअ़त, जि. अव्वल, स. 254) **अल्लाह** पाक पारह 17 **सूरतुल अम्बियाअ** आयत नम्बर 101 से 103 में इर्शाद फ़रमाता है :

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं, वोह उस की भिनक न सुनेंगे और वोह अपनी मन मानती ख़्वाहिशों में हमेशा रहेंगे। उन्हें ग़म में न डालेगी वोह सब से बड़ी घबराहट और फ़िरिश्ते उन की पेश्वाई को आएंगे कि येह है तुम्हारा वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था।

"मैं उन्हीं में से हूं"

ह़ज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ ने **सूरतुल अम्बियाअ** की आयत नम्बर 101 तिलावत फ़रमाई :

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُم مِّنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं।

फिर इर्शाद फ़रमाया : मैं उन्हीं में से हूं, (ह़ज़राते) अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, और त़ल्ह़ा, ज़ुबैर, सा'द, सईद, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ عَنْهُم (भी) उन्हीं में से हैं। **(تفسیر بیضاوی ج٤ ص١١٠)**

अल्लाह पाक पारह 19 **सूरतुन्नम्ल** आयत 59 में फ़रमाता है :

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम कहो सब ख़ूबियां **अल्लाह** को और सलाम उस के चुने हुए बन्दों पर।

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا बयान कर्दा आयते मुबारका के इस ह़िस्से : ''وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى'' (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और सलाम उस के चुने हुए बन्दों पर) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ''चुने हुए बन्दों से नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम मुराद हैं।'' **(تفسیر طبری ج١٠ ص٤ رقم٢٧٠٦٠)**

ह़राम, ह़राम, सख़्त ह़राम

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के बाहम (या'नी आपस में लड़ाई वग़ैरा के) जो वाक़िआ़त हुए, उन में पड़ना ह़राम, ह़राम, सख़्त ह़राम है, मुसल्मानों को तो येह देखना चाहिये कि वोह सब ह़ज़रात आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जां निसार और सच्चे ग़ुलाम हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. अव्वल, स. 254)

मेरी झोली में न क्यूं हों दो जहां की ने'मतें मैं हूं मंगता मैं गदा, अस्ह़ाबो अहले बैत का
क्यूं हो मायूस ऐ फ़क़ीरो ! आओ आ कर लूट लो है ख़ज़ाना बट रहा, अस्ह़ाबो अहले बैत का
या इलाही ! शुक्रिया अ़त्त़ार को तू ने किया शे'र गो, मिद्ह़त सरा अस्ह़ाबो अहले बैत का
हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

40 ह़दीसें पहुंचाने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक पहुंचाने के लिये दीन के मुतअ़ल्लिक़ "**40 ह़दीसें**" याद कर लेगा तो उसे **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन आ़लिमे दीन की ह़ैसिय्यत से उठाएगा और बरोज़े क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह होउंगा।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۲ص۲۷۰ حدیث ۱۷۲۶) इस से मुराद चालीस अह़ादीस का लोगों तक पहुंचाना है अगर्चे वोह याद न हों। اَلْحَمْدُ لِلّٰه (اشعۃ اللمعات ج۱ص۱۸۶) ! ह़दीसे पाक में बयान की गई फ़ज़ीलत पाने की निय्यत से फ़ज़ाइले सह़ाबा के मुतअ़ल्लिक़ "40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" पेश किये जाते हैं :

फ़ज़ाइले सह़ाबा के बारे में 40 ह़दीसें

(1) बेहतरीन लोग मेरे ज़माने के हैं (या'नी सह़ाबए किराम) फिर जो लोग उन के क़रीब हैं (या'नी ताबिई़न), फिर जो लोग उन के क़रीब हैं (या'नी तब्अ़ ताबिई़न)। (بخاری ج۲ص۱۹۳حدیث۲۶۵۲)

दौरे सह़ाबा की मुद्दत : शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बर बिनाए क़ौले मश्हूर **सह़ाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का ज़माना 110 हिजरी में सब से आख़िर में इन्तिक़ाल फ़रमाने वाले सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबुत्तुफ़ैल आ़मिर बिन वासिला رَضِیَ اللهُ عَنْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ पर पूरा हो गया,[1] इस के बा'द सत्तर, अस्सी (70-80) साल तक **ताबिई़न** का दौर रहा फिर पचास बरस **तब्अ़ ताबिई़न** का रहा, लगभग (या'नी तक़रीबन) दो सौ बीस हिजरी (220 सि.हि.) में तब्अ़ ताबिई़न का दौरे मुबारक ख़त्म हो गया। (नुज़्ह़तुल क़ारी, जि. 3, स. 801 ब तग़य्युरे क़लील)

[1] : تقریب التھذیب ص۲۲۸رقم۳۱۱۱

﴿2﴾ उस मुसल्मान को जहन्नम की आग नहीं छूएगी जिस ने मुझे देखा या मुझे देखने वाले (या'नी सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) को देखा। **(ترمذی ج۵ص۴۶۱حدیث۳۸۸۴)**

﴿3﴾ मेरे सह़ाबा में से जो सह़ाबी जिस सर ज़मीन में फ़ौत होगा तो क़ियामत के दिन (उस सह़ाबी को) उन (या'नी वहां के मुसल्मानों) के लिये नूर व रहनुमा बना कर उठाया जाएगा। **(ایضاً ص۴۶۳حدیث۳۸۹۱)**

﴿4﴾ मेरे अस्ह़ाब को बुरा न कहो, इस लिये कि अगर तुम में से कोई उहुद पहाड़ के बराबर भी सोना ख़र्च कर दे तो वोह उन के एक मुद (या'नी एक किलो में 40 ग्राम कम) के बराबर भी नहीं पहुंच सकता और न उस मुद के आधे। **(بُخاری ج۲ص۵۲۲حدیث۳۶۷۳)**

﴿5﴾ अन्सार (या'नी अन्सारी सह़ाबा) से मह़ब्बत ''ईमान'' की अ़लामत और इन से बुग़्ज़ ''निफ़ाक़'' की अ़लामत है। **(بُخاری ج۲ص۵۵۶حدیث۳۷۸۴)**

﴿6﴾ तुम उस वक़्त तक भलाई में रहोगे जब तक तुम में वोह शख़्स मौजूद है जिस ने मुझे देखा और मेरी सोह़बत इख़्तियार की (या'नी सह़ाबी), ख़ुदा की क़सम ! तुम उस वक़्त तक भलाई में रहोगे जब तक तुम में वोह शख़्स मौजूद है जिस ने मुझे देखने वाले को देखा और उस की सोह़बत इख़्तियार की (या'नी ताबेई), ख़ुदा की क़सम ! तुम उस वक़्त तक भलाई में रहोगे जब तक तुम में वोह शख़्स मौजूद है जिस ने मुझे देखने वाले (या'नी सह़ाबी) को देखने वाले (या'नी ताबेई) को देखा और उस की सोह़बत इख़्तियार की (या'नी तब्अ़ ताबेई)। **(مصنف ابن ابی شیبة ج۱۷ص۳۰۸حدیث۳۳۰۸۴)**

﴿7﴾ मेरे सह़ाबा की इ़ज़्ज़त करो क्यूं कि वोह तुम में बेहतरीन लोग हैं। **(الاعتقاد للبیهقی ص۳۲۰)**

《8》 मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं, इन में से जिस की भी इक़्तिदा (या'नी पैरवी) करोगे हिदायत पा जाओगे। **(جامع بیان العلم ص۳٦١حدیث٩٧٥)**

《9》 अन्सार (या'नी अन्सारी सहाबा) से महब्बत न करेगा मगर मोमिन और इन से दुश्मनी न करेगा मगर मुनाफ़िक़, तो जिस ने उन से महब्बत की **अल्लाह** पाक उस से महब्बत करे और जिस ने उन से बुग़्ज़ रखा **अल्लाह** पाक उस से नाराज़ हो। **(بخاری ج۲ص۵۵۵ حدیث۳۷۸۳)**

《10》 जो **अल्लाह** पाक और यौमे आख़िरत पर ईमान रखता है वोह अन्सार (या'नी अन्सारी सहाबा) से बुग़्ज़ नहीं रखता। **(مُسلم ص۵۷حدیث ۲۳۸)**

《11》 जिन लोगों ने दरख़्त के नीचे बैअ़त की थी, **اِنْ شَآءَاللہ** उन में से कोई भी दोज़ख़ में दाख़िल न होगा। **(مسلم ص ۱۰٤۱حدیث٦٤٠٤)**

शर्हे ह़दीस : इस से मुराद वोह **सहाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जिन्हों ने दरख़्त के नीचे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़त की थी। **(مرقات ج۱۰ص۶۰۰)** इस बैअ़त को "बैअ़ते रिज़्वान" कहते हैं और इस में चौदह सौ (1400) सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शामिल थे। **(تفسیر نسفی ص۱۱٤٤)** शारेहे मुस्लिम इमाम नववी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : "उ़लमाए किराम ने फ़रमाया कि इस ह़दीसे पाक का मत़लब येह है कि "बैअ़ते रिज़्वान" करने वाले **सहाबए किराम** عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से कोई एक भी दोज़ख़ में न जाएगा और ह़दीसे पाक में जो "**اِنْ شَآءَاللہ**" कहा गया है येह शक की वज्ह से नहीं बल्कि (**अल्लाह** पाक के नाम की) बरकत ह़ासिल करने के लिये कहा गया है।" **(شرح النووی علی مسلم ج۸ جزء۱٦ص۵۸)**

《12》 सब से अफ़्ज़ल **मैं और मेरे सहाबा** हैं। अ़र्ज़ की गई : फिर कौन अफ़्ज़ल है ? इर्शाद फ़रमाया : फिर वोह लोग अफ़्ज़ल हैं जो उन के नक़्शे

क़दम पर चलेंगे । (या'नी उन को फ़ोलो करेंगे) अ़र्ज़ की गई : फिर कौन ? इर्शाद फ़रमाया : फिर वोह जो उन (या'नी ताबिईन) की पैरवी करेंगे ।

(**अल्लाह** वालों की बातें, जि. 2, स. 129) (حلیۃ الاولیا ج٢ص٩٤ حدیث ١٥٦٣)

﴾13﴿ मेरे सह़ाबा मेरी उम्मत के लिये अमान हैं, जब येह इस दुन्या से रुख़्सत हो जाएंगे तो मेरी उम्मत पर वोह वक़्त आएगा जिस का उन से वा'दा किया गया है । (مسلم ص١٠٥١ حدیث٦٤٦٦)

शर्हे ह़दीस : ''मिरआत शरीफ़'' में है : सह़ाबए किराम के ज़माने में अगर्चे फ़ितने हुए मगर मुसल्मानों का दीन (बड़े पैमाने पर) ऐसा न बिगड़ा था जैसा कि (सह़ाबा का दौर ख़त्म होने के) बा'द में बिगड़ा और अब इस ज़माने का तो पूछना ही क्या है ! **अल्लाह** मह़फ़ूज़ रखे । (मिरआत, जि. 8, स. 336)

﴾14﴿ **اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِلصَّحَابَۃِ ،وَلِمَنْ رَّاٰی، وَلِمَنْ رَّاٰی** या'नी ऐ **अल्लाह** ! (मेरे) सह़ाबा की मग़्फ़िरत फ़रमा और जिस ने उन्हें देखा और जिस ने उन के देखने वाले को देखा उन की भी मग़्फ़िरत फ़रमा । (معرفۃ الصحابۃلابی نعیم ج١ص١٥)

﴾15﴿ **अल्लाह** पाक जब किसी की भलाई चाहता है तो उस के दिल में मेरे (तमाम) सह़ाबा की मह़ब्बत पैदा फ़रमा देता है । (تاریخ اصبہان ج ١ ص٤٦٧رقم٩٢٩)

﴾16﴿ सब से पहले मेरे लिये पुल सिरात़ को दोज़ख़ पर रखा जाएगा, मैं और मेरे सह़ाबा पुल सिरात़ से गुज़र कर जन्नत में दाख़िल होंगे ।

(الفردوس بماثور الخطاب ج١ص٤٨ حدیث١٢٠)

﴾17﴿ **अल्लाह** पाक ने मेरे सह़ाबा को नबियों और रसूलों के इ़लावा तमाम जहानों पर फ़ज़ीलत दी है । और मेरे तमाम सह़ाबा में ख़ैर (या'नी भलाई) है । (مجمع الزوائد ج٩ص٧٣٦حدیث١٦٣٨٣)

﴾18﴿ सितारों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल न करो, अपनी राय से क़ुरआने पाक की तफ़्सीर न करो और मेरे सह़ाबा में से किसी को बुरा न कहो तो येह ख़ालिस ईमान है। (الفردوس ج٥ ص٦٤ حديث٧٤٧٠)

﴾19﴿ मेरे तमाम सह़ाबा से जो मह़ब्बत करे, उन की मदद करे और उन के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी दुआ़ए मग़्फ़िरत) करे तो **अल्लाह** पाक उसे क़ियामत के दिन जन्नत में मेरे सह़ाबा का साथ नसीब फ़रमाएगा।

(فضائل الصحابة للامام احمد ج١ ص٣٤١ حديث ٤٨٩)

﴾20﴿ मेरे सह़ाबा की मेरी वज्ह से जिस ने ह़िफ़ाज़त और इ़ज़्ज़त की तो मैं बरोज़े क़ियामत उस का मुह़ाफ़िज़ (या'नी ह़िफ़ाज़त करने वाला) होउंगा। और जिस ने मेरे सह़ाबा को गाली दी उस पर **अल्लाह** पाक की ला'नत है।

(فضائل الصحابة للامام احمد ج٢ ص٩٠٨ حديث١٧٣٣)

﴾21﴿ जो मेरे सह़ाबा को बुरा कहे उस पर **''अल्लाह पाक की ला'नत''** और जो उन की इ़ज़्ज़त की ह़िफ़ाज़त करे, मैं क़ियामत के दिन उस की ह़िफ़ाज़त करूंगा (या'नी उसे जहन्नम से मह़फ़ूज़ रखा जाएगा)।

(تاريخ ابن عساكر ج٤٤ ص ٢٢٢،السراج المنير شرح جامع الصغير ج٣ ص٨٦)

﴾22﴿ जिस ने मेरे सह़ाबा के मुतअ़ल्लिक़ अच्छी बात कही तो वोह निफ़ाक़ से बरी (या'नी आज़ाद) हो गया, जिस ने मेरे सह़ाबा के मुतअ़ल्लिक़ बुरी बात कही तो वोह मेरे त़रीक़े से हट गया और उस का ठिकाना आग है और क्या ही बुरी जगह है पलटने की। (جمع الجوامع ج٨ص٤٢٨ حديث٣٠٢٦٢)

﴾23﴿ मेरे सह़ाबा के मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** से डरो! **अल्लाह** से डरो! मेरे सह़ाबा के बारे में **अल्लाह** से डरो! **अल्लाह** से डरो! मेरे बा'द इन्हें निशाना

न बनाओ क्यूं कि जिस ने इन से मह़ब्बत की तो मेरी मह़ब्बत की वज्ह से इन से मह़ब्बत की और जिस ने इन से बुग़्ज़ रखा तो मेरे बुग़्ज़ की वज्ह से इन से बुग़्ज़ रखा और जिस ने इन्हें सताया उस ने मुझे सताया और जिस ने मुझे सताया उस ने **अल्लाह** को ईज़ा दी और जिस ने **अल्लाह** को ईज़ा दी तो क़रीब है कि **अल्लाह** उसे पकड़े। (ترمذی ج ٥ ص ٣٦٣ حدیث ٣٨٨٨)

अल्लाह व रसूल को ईज़ा देने वालों को अ़ज़ाब की वईद

अल्लाह व रसूल को ईज़ा देने वालों के बारे में **अल्लाह** पाक पारह 22 **सूरतुल अह़ज़ाब** आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईज़ा देते हैं **अल्लाह** और उस के रसूल को उन पर **अल्लाह** की ला'नत है दुन्या और आख़िरत में और **अल्लाह** ने उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

﴿24﴾ क़ियामत के दिन हर शख़्स को नजात की उम्मीद होगी सिवाए उस शख़्स के जिस ने मेरे सह़ाबा को गाली दी, बेशक अहले मह़शर उन (या'नी सह़ाबा को गाली देने वालों) पर ला'नत करेंगे। (تاریخ اصبهان ج١ ص١٢٦)

﴿25﴾ اِذَا ذُکِرَ اَصْحَابِیْ فَاَمْسِکُوْا या'नी जब मेरे अस्ह़ाब का ज़िक्र आए तो "बाज़" रहो (या'नी बुरा कहने से बाज़ रहो)। (معجم کبیر ج٢ ص٩٦ حدیث ١٤٢٧)

शर्ह़े ह़दीस : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा भला कहने से बाज़ रहो। क्यूं कि क़ुरआने करीम में उन के लिये रिज़ाए इलाही का मुज़्दा (या'नी ख़ुश ख़बरी)

बयान हो चुकी है, लिहाज़ा ज़रूर उन का अन्जाम (या'नी ठिकाना) परहेज़ गारी और रिज़ाए इलाही के साथ जन्नत में होगा। और येह वोह हुक़ूक़ हैं जो उम्मत के ज़िम्मे बाक़ी हैं लिहाज़ा जब भी उन का ज़िक्र हो तो सिर्फ़ो सिर्फ़ भलाई और उन के लिये नेक दुआओं के साथ हो। (مرقات ج۹ص۲۸۲)

﴾26﴿ बेशक रोज़े क़ियामत लोगों में शदीद तरीन अ़ज़ाब उस को होगा जिस ने अम्बिया (عَلَيْہِمُ السَّلَام) को बुरा कहा, फिर उस को जिस ने मेरे सह़ाबा को बुरा कहा फिर उस को जिस ने मुसल्मानों को बुरा कहा।

(حلیۃ الاولیا ج٤ص۱۰۰حدیث ٤٨٩٤)

﴾27﴿ **अल्लाह** पाक की उस शख़्स पर ला'नत हो, जिस ने मेरे सह़ाबा को गाली दी। (معجم کبیر ج۱۲ص۳۳۲حدیث۱۳۵۸۸)

सह़ाबा को ऐ़ब लगाने वाले

﴾28﴿ बेशक **अल्लाह** पाक ने मुझे मुन्तख़ब (Select) फ़रमाया और मेरे लिये सह़ाबा मुन्तख़ब फ़रमाए, और अ़न्क़रीब ऐसी क़ौम आएगी जो इन की शान घटाएगी, इन्हें ऐ़ब लगाएगी और गाली देगी, लिहाज़ा तुम न उन के साथ बैठना, न उन के साथ खाना, न पीना, न उन के साथ नमाज़ पढ़ना और न उन की नमाज़े (जनाज़ा) पढ़ना। (الجامع لاخلاق الراوی للخطیب البغدادی ج۲ص۱۱۸ رقم۱۳۵۳)

﴾29﴿ बेशक मेरी उम्मत के बद तरीन लोग वोह हैं जो मेरे सह़ाबा पर जुर्अत करने वाले हैं। (الکامل فی ضعفاء الرجال لابن عدی ج۹ص۱۹۹)

शर्हे ह़दीस : या'नी वोह लोग जो सह़ाबए किराम عَلَيْہِمُ الرِّضْوَان को बुरा भला कहते हैं और उन के बारे में ऐसी बातें करते हैं जो उन की शान व मन्सब के लाइक़ नहीं, ऐसा करना सख़्त तरीन ह़राम काम है, सह़ाबए किराम

عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बुरा भला कहना बुराई पर जरी (या'नी जुर्अत करने वाला) होने की अ़लामत है और उन की इ़ज़्ज़तो एह़तिराम करना अच्छा होने की अ़लामत है और ह़क़ (या'नी सह़ीह़) बात येह है कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता'ज़ीम की जाए और उन को बुरा कहने से ज़बान को रोका जाए, चाहे वोह सह़ाबए किराम मुहाजिरीन में से हों या अन्सार में से।

(فیض القدیر ج۲ص۵۷۵ تحت الحدیث ۲۲۸۱)

﴿30﴾ जो मेरे सह़ाबा को बुरा कहे, उस पर **अल्लाह** पाक, फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत, **अल्लाह** पाक उस का न फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा न नफ़्ल।

(الدعاء للطبرانی ص۵۸۱رقم۲۰۱۸)

﴿31﴾ जो शख़्स मेरे सह़ाबा, अज़्वाज और अहले बैत से अ़क़ीदत रखता है और इन में से किसी पर त़ा'न नहीं करता (या'नी बुरा भला नहीं कहता) और इन की मह़ब्बत पर दुन्या से इन्तिक़ाल करता है वोह क़ियामत के दिन मेरे साथ मेरे दरजे में होगा।

(جمع الجوامع ج۸ص۴۱۴حدیث ۳۰۲۳۶)

सालिह़ीन (या'नी नेक लोगों) के साथ होने से येह लाज़िम नहीं आता कि उस का दरजा और जज़ा हर ए'तिबार से सालिह़ीन की मिस्ल होगी बल्कि किसी दरजे में किसी ख़ास ए'तिबार से शिर्कत होगी अगर्चे मक़ामो इ़ज़्ज़तो मे'यार के ए'तिबार से लाखों दरजे फ़र्क़ हो, जैसे मह़ल में बादशाह और ग़ुलाम (या कोठी में सेठ और मुलाज़िम) दोनों होते हैं लेकिन फ़र्क़ वाज़ेह़ है।

﴿32﴾ मेरे सह़ाबा के मुआ़मले में मेरा लिह़ाज़ करना क्यूं कि वोह मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग हैं।

(مسند الشهاب ج۱ص۴۱۸ حدیث ۷۲۰)

﴿33﴾ मेरे बा'द मेरे अस्ह़ाब से कुछ लग़्ज़िश होगी, **अल्लाह** पाक उन्हें मेरी

सोह़बत के सबब मुआ़फ़ फ़रमा देगा और उन के बा'द कुछ लोग आएंगे जिन को **अल्लाह** पाक मुंह के बल दोज़ख़ में डाल देगा। **(معجم اوسط ج۲ص۲۶۰حدیث۳۲۱۹)**

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन बा'द वालों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : येह वोह हैं जो उन लग़्ज़िशों के सबब सह़ाबा पर त़ा'न करेंगे।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 336)

﴾34﴿ मेरी उम्मत में मेरे सह़ाबा की मिसाल खाने में नमक की सी है कि खाना बिग़ैर नमक के दुरुस्त नहीं होता। **(شرح السنہ ج۷ص۱۷٤حدیث۳۷۵٦)**

﴾35﴿ जब तुम लोगों को देखो कि मेरे सह़ाबा को बुरा कहते हैं तो कहो : **अल्लाह** पाक की ला'नत हो तुम्हारे शर पर। **(ترمذی ج۵ص٤٦٤ حدیث۳۸۹۲)**

शर्ह़े ह़दीस : ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी सह़ाबए किराम तो ख़ैर ही ख़ैर हैं तुम उन को बुरा कहते हो तो वोह बुराई ख़ुद तुम्हारी त़रफ़ ही लौटती है और इस का वबाल तुम पर ही पड़ता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 344)

﴾36﴿ मुझे कोई सह़ाबी किसी की त़रफ़ से कोई बात न पहुंचाए, मैं चाहता हूं कि तुम्हारे पास साफ़ सीना आया करूं। **(ابوداؤد ج٤ص۳٤۸حدیث ٤۸٦۰)**

शर्ह़े ह़दीस : "मिरआत शरीफ़" में है : या'नी किसी की अ़दावत, किसी से नफ़रत दिल में न हुवा करे। येह भी हम लोगों के लिये **बयाने क़ानून** है कि अपने **सीने** (मुसल्मानों के कीने से) साफ़ रखो ताकि उन में **मदीने** के अन्वार देखो, वरना **हुज़ूर** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सीनए रह़मत, नूरे करामत का गन्जीना है वहां कदूरत (या'नी बुग़्ज़ो कीने) की पहुंच ही नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 472)

﴾37﴿ मुझे लोगों में सब से ज़ियादा मह़बूब तुम (या'नी अन्सारी सह़ाबा) हो,

मुझे लोगों में सब से ज़ियादा तुम महबूब (या'नी प्यारे) हो। (مسلم ص١٠٤٤حديث٦٤١٧)

﴾38﴿ मुहाजिरीन व अन्सार मदीने शरीफ़ के गिर्द ख़न्दक़ खोदने में मसरूफ़ थे, तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह दुआ मांगी : ऐ **अल्लाह**! भलाई नहीं मगर आख़िरत की भलाई, पस अन्सार व मुहाजिरीन में बरकत फ़रमा। (بخاری ج٢ص٢٦٤حديث٢٨٣٥)

﴾39﴿ अगर लोग एक जंगल या घाटी में चलें तो मैं अन्सार (या'नी अन्सारी सहाबा) के जंगल या उन की घाटी में चलूं और अन्सार अन्दरूनी लिबास (की तरह) हैं और बाक़ी लोग बैरूनी लिबास (या'नी बाहरी लिबास की तरह) हैं। (بخاری ج٣ ص١١٦ حديث٤٣٣٠ مختصراً)

शर्हे हदीस : "मिरआत शरीफ़" में है : या'नी अगर तमाम जहान की राय एक हो और अन्सार (या'नी अन्सारी सहाबा) की राय दूसरी हो, तो मैं अन्सार की राय के मुवाफ़िक़ राय दूंगा, तमाम की राओं पर अन्सार की राय को तरजीह दूंगा, येह मतलब नहीं कि मैं अन्सार की इत्तिबाअ़ करूंगा, सारा जहान हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुत्तबेअ़ है, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी शख़्स या किसी क़ौम के मुत्तबेअ़ (या'नी पैरवी करने वाले) नहीं। अन्नास (या'नी बाक़ी लोग) से मुराद आ़म मोमिनीन हैं, हज़राते ख़ुलफ़ाए राशिदीन या फ़ातिमा ज़हरा व हसनैने करीमैन (رَضِیَ اللهُ عَنْهُم) इस में दाख़िल नहीं। (मिरआत, जि. 8, स. 527, 528 मुलख़्ख़सन)

दुआए मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾40﴿ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِلْاَنْصَارِ، وَلِاَبْنَاءِ الْاَنْصَارِ، وَاَبْنَاءِ اَبْنَاءِ الْاَنْصَارِ या'नी ऐ **अल्लाह**! अन्सार (या'नी अन्सारी सहाबा) की और इन के बेटों और पोतों की मग़्फ़िरत फ़रमा। (مسلم ص١٠٤٤حديث٦٤١٤)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

हर सह़ाबिये नबी ! जन्नती जन्नती
चार याराने नबी जन्नती जन्नती
और उ़मर फ़ारूक़ भी जन्नती जन्नती
फ़ात़िमा और अ़ली जन्नती जन्नती
वालिदैने नबी जन्नती जन्नती
और अबू सुफ़्यान भी जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी ! जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी जन्नती जन्नती
उ़स्माने ग़नी जन्नती जन्नती
हैं ह़सन ह़ुसैन भी जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी जन्नती जन्नती
हैं मुआ़विया भी जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

क्यूं न हो रुत्बा बड़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

क्यूं न हो रुत्बा बड़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का
है ख़ुदाए मुस्त़फ़ा, अस्ह़ाबो अहले बैत का

आलो अस्ह़ाबे नबी सब बादशह हैं बादशाह
मैं फ़क़त़ अदना गदा अस्ह़ाबो अहले बैत का

मेरी झोली में न क्यूं हों दो जहां की ने'मतें
मैं हूं मंगता मैं गदा अस्ह़ाबो अहले बैत का

क्यूं हो मायूस ऐ फ़क़ीरो ! आओ आ कर लूट लो
है ख़ज़ाना बट रहा अस्ह़ाबो अहले बैत का

फ़ज़्ले रब से दो जहां में काम्याबी पाएगा
दिल से जो शैदा हुवा अस्ह़ाबो अहले बैत का

ऐ ख़ुदाए मुस्त़फ़ा ! ईमान पर हो ख़ातिमा
मग़्फ़िरत कर ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

जीना मरना उन की उल्फ़त में हो या रब ! और हो
क़ुर्ब जन्नत में अ़त़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

ह़श्र में मुझ को शफ़ाअ़त की अ़त़ा ख़ैरात हो
वासित़ा या मुस्त़फ़ा ! अस्ह़ाबो अहले बैत का

नूर वाले ! क़ब्र मेरी ह़श्र तक रोशन रहे
वासित़ा तुम को शहा ! अस्ह़ाबो अहले बैत का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

हर बरस मैं ह़ज करूं, मीठा मदीना देख लूं — या इलाही ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

नज़्अ़ में ह़सनैन के नाना का जल्वा हो नसीब — या इलाही ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

दे गुनाहों से नजात और मुत्तक़ी मुझ को बना — या इलाही ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

दर्दे इ़स्यां की दवा मिल जाए मैं बन जाऊं नेक — या इलाही ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

दूर हो दुन्या से मौला येह "कोरोना" की वबा — या इलाही ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

शाह की दुख्यारी उम्मत के दुखों को दूर कर — या इलाही ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

तंगदस्ती दूर हो और रिज़्क़ में बरकत मिले — या इलाही ! वासित़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का

या इलाही ! शुक्रिया अ़त्त़ार को तू ने किया

शे'र गो, मिद्ह़त सरा अस्ह़ाबो अहले बैत का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

11 जुमादल उख़्रा 1442 सि.हि.

25-01-2021

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** पाक उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	✻✻✻✻	اشعۃ اللمعات	
تفسیر طبری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فیض القدیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر نسفی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	السراج المنیر	مکتبۃ الایمان المدینۃ المنورۃ
تفسیر صاوی	دار الفکر بیروت	مرقاۃ	دار الفکر بیروت
تفسیر عزیزی		مرآۃ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	نزہۃ القاری	فرید بک اسٹال
مسلم	دار الکتاب العربی بیروت	فضائل الصحابۃ	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت
ابو داود	دار احیاء التراث العربی بیروت	معرفۃ الصحابۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	تاریخ اصبہان	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مصنف ابن ابی شیبہ	دار الفکر بیروت	الجامع لاخلاق الراوی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم کبیر	دار احیاء التراث العربی بیروت	الکامل فی ضعفاء الرجال	دار الکتب العلمیۃ بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ابن عساکر	دار الفکر بیروت
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت	تقریب التہذیب	دار العاصمۃ الریاض
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الدعاء	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الاعتقاد	دار الآفاق الجدیدۃ بیروت	سعادۃ الدارین	دار الکتب العلمیۃ بیروت
جامع بیان العلم	دار الکتب العلمیۃ بیروت	شرح الصدور	مرکز اہل سنت برکات رضا الہند
مسند الشہاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	نزہۃ النظر	مکتبۃ المدینہ
الفردوس بماثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن
شرح السنۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ
جمع الجوامع	دار السعادۃ الازہر	ملفوظات اعلی حضرت	مکتبۃ المدینہ
مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت	اللہ والوں کی باتیں	مکتبۃ المدینہ
شرح النووی علی مسلم	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले की..... (ह़िकायत)	1	काना मुर्दा	7
अल्लाह करीम ने सब सह़ाबा से जन्नत का वा'दा फ़रमा लिया है	2	फ़िरिश्ते सह़ाबा का इस्तिक़्बाल करेंगे	8
		"मैं उन्हीं में से हूं"	8
सह़ाबए किराम की दो अक़्साम	2	ह़राम, ह़राम, सख़्त ह़राम	9
सह़ाबी की ता'रीफ़	3	40 ह़दीसें पहुंचाने की फ़ज़ीलत	10
सह़ाबए किराम की ता'दाद	3	फ़ज़ाइले सह़ाबा के बारे में 40 ह़दीसें	10
फ़ज़ीलत के ए'तिबार से सह़ाबए किराम की तरतीब	3	**अल्लाह** व रसूल को ईज़ा देने वालों को अ़ज़ाब की वईद	15
चार याराने नबी	4	सह़ाबा को ऐ़ब लगाने वाले	16
ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत	5	दुआए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	19
सह़ाबिये रसूल का मर्तबा	6	क्यूं न हो रुत्बा बड़ा अस्ह़ाबो अहले बैत का	20
सह़ाबी से कोई भी वली बढ़ नहीं सकता	7		

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तंगदस्ती से बचने का वज़ीफ़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने रोज़ाना 100 मरतबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ पढ़ा वोह दुन्या में मोहताजी से बचेगा, उसे क़ब्र में घबराहट न होगी और उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे।

(शहुंस्सुदूर (उर्दू) स. 285, मकतबतुल मदीना, شرح الصدور ص158)

978-969-722-160-8
01080807

فیضان مدینہ محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net